ॐ

30.1.12.

मुंबई के साधको के लिये विशेष संदेश

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

मेरा चित्त एक कॉम्पुटर्स जैसा है, और उसमे सभी रेकार्ड स्टोर रहते है। आज अचानक "मुंबई" मे कैसा प्रथम शिबीर हुआ था, और कैसे "गुरुकार्य" की शुरवात हुयी वह याद आया तो अनायास ही उस समय की स्थिती उस समय का वैचारिक प्रदुषण भी सामने आया उस समय "मुंबई" का "नाभीचक्र" पकडा था, और कितना भी मीला तो भी समाधान नही था, और इसी बात को ध्यान मे रखकर ध्यान का छोटा सा २० लोगो का शिबीर आज से १२ साल पुर्व लिया था, और मनुष्यो को समाधान मीले यह प्रभु से "प्रार्थना" की थी, आज की स्थिती एकदम खराब है। क्योकी सहज जाना क्या मुंबई के सामुहीकता मे बदलाव आया है, तो जाना की आज "हृदयचक्र" ही पकडा है, मुंबई मे प्रत्येक मनुष्य अपने आप को असुरक्षीत महसुस कर रहा है, जो घर के बाहर निकलते है, वे अपने को असुरक्षीत समझे यह बात तो समझ मे आती है। जो घर मे ही है। वे भी अपने आप को असुरक्षीत समझ रहे है, वे असुरक्षीत है, नही लेकीन फीर भी अपने आप को

क्योंन आप सभी "मुंबई" के साधक मीलकर इस आश्रम को "दत्तक" ले। और सभी मील कर आप आपकी आवश्यकतानुसार इसे निर्माण कर ले। और फीर प्रती सप्ताह यहाँ आकर रहे और "ध्यान साधना" करे, यह एक शांन्त स्थान पर स्थीत है। "बस्तीयो" से दूर है। अब उसका निर्माण कार्य भी प्रांरभ हो गया है। और वह कार्य चलेगा लेकीन वह चलेगा अपनी "हिमी चाल" से उससे अच्छा आप सामुहीकता मे उसके निर्माण मे शामील हो जाये और एक साल मे उसे निर्माण कर ले। यह स्थान मेरी "ध्यानस्थली" रहा है, सभी "गहनध्यान अनुष्ठान" यही हुये है।
मुंबई की सामुहीक शक्ती बहुत बडी है। यह कार्य आप आसानी से पुर्ण कर सकते है, आप अपनी शक्ती को पहचाने और आज "आश्रम" की सबसे अधीक आवश्यकता आप ही को है। गहन ध्यान अनुष्ठान मे गुरुशक्तीयो को जो लगा वह उन्होने मुझसे लिखवाया अब आगे का आप ही सामुहीक विचार करो। और "सामुहीक प्रयास" करो तो मुझे खुशी होगी, परमात्मा यह कार्य सफल करने की आपको शक्ती और सामर्थ दे। यही प्रार्थना है, आप सभी को खुब खुब आर्शीवाद

आपका
बाबा स्वामी
30/11/2012

असुरक्षित समझ रहे हैं, अब यह है। उसको क्या किया जा सकता है। वैचारिक प्रदूषण भी एक प्रकार की बीमारी है, जो एक छुत के रोग की तरह फैलती है। और यह सब इसी के कारण ही हुआ है, घनी बस्तीया, और भिड़भाड़ वाले, जिवन के कारण हमारा आभा मंडल स्वतंत्र कभी होता ही नही है, हमारे आभा मंडल पर सदैव कोसी अन्य मनुष्य का प्रभाव होता है, इस लीये भीड़ भाड़ वाले स्थानो से दुर ही रहने का प्रयास करो कही खडे ही रहना है, तो थोडा सा हट कर खडे रहो। घर मे नियमीत ध्यान करो उससे सदैव सामुहिकता का "सुरक्षा कवच" तुम्हारे साथ सदैव होगा और रोसा करने से आप सुरक्षीत रहोगे भी और सुरक्षीत अपने आप को समझोगे भी। और "सेन्टरो" पर नियमीत जाओ. क्योकी सेन्टरो पर जाने से सामुहिक शकती के साथ हमारा "जिवन्त" सम्पर्क बना होता है। आज सेन्टरो पर जाकर ध्यान करने की आपको बडी आवश्यकता है, खराब सामुहिक उर्जा से, सदैव अच्छी सामुहिक उर्जा से ही बचा जा सकता है, अभी हाल ही मे समर्पण ध्यान के कई राज्यो मे आश्रम निर्माण हो रहे हैं। इस समय मुझे आपकी याद आयी की, "आश्रम" की सबसे अधीक तो आवश्यकता आप को ही है, आपको रोज रोसे "आश्रम" की आवश्यकता है, जहाँ सप्ताह मे नही तो महीने मे तो भी एक बार जा सके वहाँ के शांन्त और पवीत्र वातावरण मे रह सके रोसा एक भी स्थान आपके पास नही है, फिर मैने सोचा की आपके सबसे करीब तो "दांडी" का ही "आश्रम" है, जहाँ पांच घंन्टे के प्रवास से पहुचा जा सकता है।